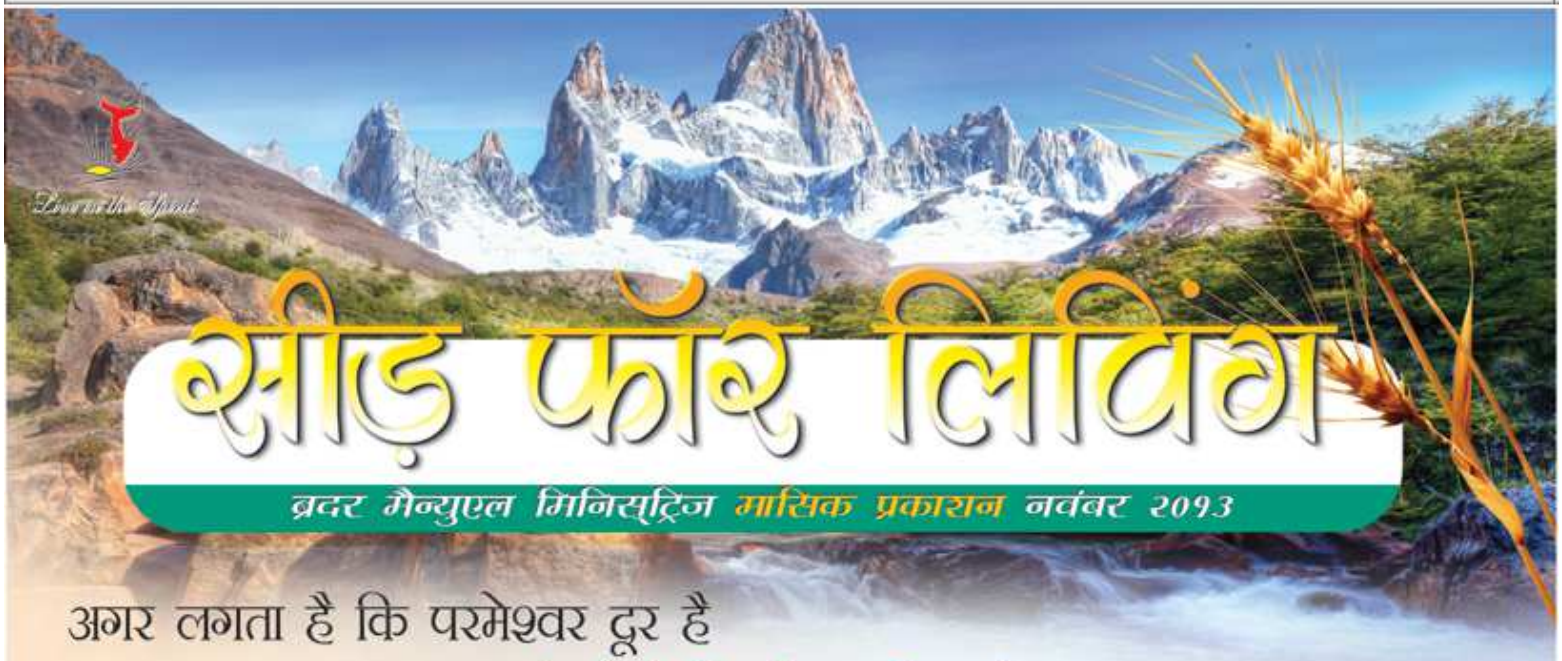

सीड़ फॉर लिविंग

ब्रदर मैन्युएल मिनिस्ट्रिज मासिक प्रकाशन नवंबर २०१३

अगर लगता है कि परमेश्वर दूर है

तो सोचो किसने दूर किया है?

आज एक विश्वासू होते हुए, तुम अपने जीवन को देखोगे तो कुछ खास नहीं दिखेगा – तुम देखोगे, कि तुम पूर्णतः खुश नहीं हो और नाही बहुतायत के आनंद में हो। उम्मीद भी जैसे दूर लगती है। तुम नहीं जानते तुमसे क्या गलती हुई। येशू तो तुमहारे जीवन में सबकुछ बहतर करने के लिए है। लेकिन शायद तुम सोचते होंगे कि परमेश्वर कहाँ है और क्यों अपने आपको प्रकट नहीं कर रहे। फिर तुम्हें बुरा लगता है और परमेश्वर के आज के दिन की अपर्याप्त उपलब्दी से तुम निराश हो जाते हो।

अक्सर, बहुत से लोगों के जीवन की परेशानी का हल नामाफी में छुपा है। बहुत से लोग आसानी से माफ नहीं कर पाते है। बुरा लगने के डर से, हम आत्म सुरक्षा के लिए सच्चाई से पलटते है, और यह हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। जब हम अनुचित काम करते है तब हम स्वाभाविक रुप से करुणा, अनुग्रह और नामाफी से नहीं उमड़ते। हमारा विश्वास हमसे क्षमा करनी की माँग करता है और हमारे जीवन में भी ऐसा ही होता है।

सच्ची क्षमा, यह "मैं तुम्हारी क्षमा याचना स्वीकारता हूँ" या "मैं तुम्हें माफ करता हूँ" इस से भी बढ़कर है। यह शब्दों से भी अधिक है। इस मे हमारे जागरुक फैसले की आवश्यकता है। दूसरों को माफ करने का दावा करने से पहले तुम्हें अपने अंदर के गुणों को टटोलना हैं, जैसे, तुम अपने आसपास के लोगों को कितना दुखाते हो, उनका उल्लंघन करते हो और हानि पहुँचाते हो – अक्सर उन्हें जिन्हें हम प्यार करते है।

माफी के बिना कोई भी रिश्ता ज्यादा समय तक कायम नहीं रह सकता, खास कर शादी का रिश्ता। हो सकता है, माफ करना आपको कठीन लगे फिर भी, शादी के रिश्ते में माफ करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब आप ऐसे लागों से मिलते हो जो अपने अंदर गुस्सा या नमाफी पालते है, तो आप देखोगे कि इससे उनके जीवन पर भी बुरा असर होता है और साथ ही परमेश्वर के साथ उनके इस सफर में भी। नमाफी वो अतिरिक्त सामान है, जिसे हमे उठाना ही नहीं है।

हमे परमेश्वर को खुश करने के लिए बुलाया गया है, और जब हम दूसरों को माफ नहीं करते तो इससे वे बिल्कुल भी खुश नहीं होते। असल में, हमारे अपराधों के लिए जो माफी हमे परमेश्वर से मिलती है, उसमे हमारी नमाफी ही रुकावट बनती है। आपके जीवनसाथी ने जो भी किया हो, कोई बात नहीं, लेकिन परमेश्वर तुम्हें उसे माफ करने के लिए बुलाते है। अगर आप नहीं करते, तो तुम लगातार दुःख में ही रहोगे, आपमें कडवाहट बढेगी और निर्दोष लोगों को भुगतना पडेगा।

आप वो सबकुछ इसी समय बदल सकते हो। अगर इस समय आपके दिल और जीवन में कोई भी नमाफी है, तो मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ, कि आप इस मुददे पर ध्यान दे और सबसे पहले इसे निपटकर, छुटकारा पाओ। इसे येशू के पास ले जाओ, उन्हें दे दो, क्योंकि केवल वे ही है, जो हमे इससे मुक्ति दे सकते है। अपने पिता के सामने झुको और उनसे माफी माँगो। उनसे मदद माँगों ताकि जैसे उन्होंने आपको माफ किया है, वैसे आप भी दूसरों को माफ कर सको।

–ब्रदर मैन्युएल मेरगुल्याओं

क्या आपको किसी ने चोट पहुँचायी है जिससे आप बहुत प्यार करते हो? बहुत कठीन होता है उन लोगों को माफ करना जिन्होंने आपके साथ गलत किया हो, खास कर वो लोग जिनसे आप प्यार करते हो और भरोसा करते हो। माफ करना यह सहनशीलता का एक विशेष गुण होता है, और यह सभी के पास नहीं होता। यह किताब आपको माफी के अनेक परिणाम और फायदे भी बताएगी। आखिरकार, आपके सारे आशिर्वाद और उद्धार केवल इसी बात से जुडे है कि आप कितने इच्छुक्त हो और आपमे माफ करने की कितनी क्षमता है।

आज ही अपनी काफपी बुक करें !!!

कहो हाँ!

परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं। वो अंधे को दृष्टि, गूंगे को वाणी देता है और लंगडे को चलाता है... वह एक गरीब इन्सान को अमीर बना सकता है, उतनी ही आसानी से जैसे एक भयभीत को निडर।

सबसे दिलचस्प बात है, कि असंभव दिखनेवाली चीजों को भी परमेश्वर सहजता से पूर्ण करते जाते है। निश्चित ही, परमेश्वर के तरीके कभी भी रीति अनुसार नहीं होते। जैसे कि जब येशू उस अंधे आदमी को चंगाई देना चाहते थे, तब वे मिट्टी में थूके और उसका लेप बनाकर [illegible] आँखों पर लगाया। अक्सर जब आप किसी की आँखें खोलने में उसकी मदद करते हो, तब आप उसकी आँखों में ऐसा कुछ नहीं लगाते जिससे दर्द और तकलीफ होगी, सही है? सच्चा परमेश्वर के तरीके हमारे तरीकों से अधिक ऊँचे और बेहतर है। वो ऐसी चीजें करते हैं, जो मनुष्य के समझ से बाहर है। और सबसे बड़ी बात है, कि ये सारी चीजें भली ही होती है।

जब परमेश्वर कुछ रचना चाहते है, तो वे उसे वास्तव में बोलते है। जब परमेश्वर उजाला थे चाहते थे, तब उन्होंने कहा "उजियाला हो," और उजियाला हो गया। परमेश्वर आपको वो बना सकते है, जो वे आपको बनाना चाहते है। उन्हें केवल वचन बोलना है।

दूसरी दिलचस्प सच्चाई यह है कि जब भी परमेश्वर कुछ महान करना चाहते है, तो वे पूर्णतः अयोग्य व्यक्ति को चुनते है। याकूब एक धोखेबाज था; पतरस गुस्सेल था; दाऊद का गलत संबंध था, नूह शराब के नशे में था, योना परमेश्वर से दूर भाग रहा था; पौलुस हत्यारा था; मरियम नींदा करनेवाली थी; मार्था चिंता करनेवाली थी; थोमा शंका करनेवाला था; सारा बेचैन थी; एलिय्याह मूडी था; मूसा हकलता था; जक्कई नाटा था; अब्राहम बूढ़ा था; और लाजरस – वह मरा था।

लेकिन जब परमेश्वरने इन लोगों को छूआ, तब उन्होंने असाधारण चीजें की। दाऊद, एक गड़रिया था, लेकिन आज वह इस्त्राएल के महान राजाओं में से एक जाना जाता है। मूसा को एक महान नबी के तौर पर पहचाना जाता है। ये सब आपके और मेरे जैसे ही आम इन्सान थे। और उस समय परमेश्वरने जो कुछ इन लोगों के लिए था, वही सबकुछ वो आज हमारे लिए भी कर सकते हैं। याद रखो, परमेश्वर योग्य लोगों को नही बुलाते है; लेकिन जो बुलाए गए है, उन्हें वो योग्य बनाते है। तो क्या तुम उनके बुलावे का जवाब देने के लिए तैयार हो?

आपको केवल कहना है, "हाँ, प्रभू। मेरे जीवन में सबकुछ आपके इच्छा अनुसार हो।" आमीन!

– संपादकीय डेस्क

Kingdom of God

Seek first the Kingdom of God,
And all His righteousness. (Matt 6:33)
Then all things will be given unto you,
And people will then realize
That you are His blessedness.
All laws will cease to be (Matt 5:17)
For the just and righteous,
It's both for you and for me.

The law was made
For those who do wrong. (Rom 13:3 -5)
With God and mankind
You must get along, (1 Tim 3:7-9)
All because of His free gift,
We call it grace. (Eph 1:2, 2Cor 12:9)
He purchased us at a price (1Cor 6:20)
To save us from disgrace. (Eph 1:4)

Repent and believe in the "Good News". (Mark 1:15)
"The Kingdom of Heaven is near." (Matt 10:7, Luke 10:9)
If the Lord be with you
What have we to fear? (Rom 8:31)
If we accept Jesus, "The Lamb of God"
Who takes away our sin. (John 1:29)
Then we are the new creation (2Cor 5:17)
Unlike in the past what we have been.

Benedict Vivian Fernandez

स्वर्ग के नागरिक !

आपके जीवन में घटे हुए चमत्कार को देखकर, आप एकमात्र सच्चे जीवित परमेश्वर में विश्वास करने लगे हो, जो येशू है, और चाहा कि आप उन्हें और गहराई से जाने और उनके आशिर्वादों को अधिक रुप से पाए। आपने उनका अनुसरण किया और अचानक इस राजाने आपके सामने अपने विशाल राज्य की तस्वीर रखी और इस राज्य के नागरिकों के गुणों का वर्णन भी किया।

मत्ती ५:३ "धन्य/आशिर्वादित हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"

आशिर्वादित? और दीनता? क्या "आशिर्वादित होने" का अर्थ भरपूरता और उमड़ता हुआ धन, सेहत, सुरक्षा और खुशी नहीं है? लेकिन वो व्यक्ति नहीं जिसके पास ये सारी चीजों की कमी है?

क्योंकि एक गरीब को पैसों की कमी होती है, इसलिए हम यह कल्पना करेंगे कि एक जो "मन के दीन है" उनमे आंतरिक कमी होती है। क्या परमेश्वर आपसे कभी नहीं कहते, कि तुम अपनी आत्मा की दीनता और कमी को पहचानो, और आत्मिक साधनों पर निर्भर रहो जो आपको जीवन, खुशी, प्यार और आत्मविश्वास प्रदान करता है?

और मै अपने आपको आत्मिक समृद्ध नहीं देख रही हूँ। इसका अर्थ अपने आपको कम समझना या दुःखी होना नहीं है, और नाही, कि मैं अपने आपको पसंद नहीं करती या फिर मैं पूर्णरुप से "हाताष" हो गयी हूँ। बल्कि, यह वो स्थिति है, जो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के माध्यम को खोलेगी! और हमारे अभाव में ही हम आशिर्वादित होते है, क्योंकि केवल इसी प्रकार, हम उस सच्ची समृद्धी की ओर मुड़ते है, जो हमे परमेश्वर मे मिलती है और जो हम ना कभी उत्पन्न कर सकते है, ना बना सकते है, और नाही अधिकार जमा सकते है।

हमारे दिल की गहराई में परमेश्वर हमे हमारी आत्मिक दीनता का एहसास दिलाते है, ताकि हम लगातार उनके जीवन और प्यार के महान समृद्धी को प्राप्त करते रहें, जिसे हमारे साथ बाँटने के लिए परमेश्वर बहुत ही उत्सुक है।

जितने ज्यादा हम मसीह में समझदार होते है, उतने ज्यादा हम हमारे आत्मिक कमी के बार में जागृत होते है और उतना ही ज्यादा हम परमेश्वर के राज्या को पूरी तरह और लगातार पाने की आशा रखते है।

हम अच्छी तरह जानते है, कि कोई भी व्यक्ति या चीज हमारे इस आत्मिक खालीपन को भर नहीं सकती।

इस तरह की कमी हमे स्वर्गीय राज्य के उस खजाने की खोज में आगे बढ़ाती है, जो अपने आप में ही एक अदभूत मुकाम है! हम जीवित प्राणी है, इसलिए अपने बलबूते पर, हम केलव मन के दीन हो सकते है और यह कोई गलती या शर्म की बात नहीं। परमेश्वरने हमे रचा है, ताकि हम खुद के बलबूते पर नहीं; बल्कि, उनसे हमारा आत्मिक धन पाये; वास्तविक रुप से उनके द्वारा आशिर्वादित हो जाए। आत्मिक दीनता की पहचान होने का अर्थ हैं, कि हम हमारी रचना के सही उद्येश्य जान गए हैं, और हम लगातार स्वर्गीय पिता से वो पाते रहते हैं, जो परमेश्वर हमे देना चाहते है – स्वयं को और उनके राज्य को।

वाकई, हम देखते है, कि जो मन के दीन है वो कैसे मसीह मे आशिर्वादित है, और कैसे वो हमारे लिए, हमारे जगह पर खड़े होते है और हमारे लिए जीते है।

फिलिप्पियों में, पौलुस हम से कहता है कि प्रभु परमेश्वर होते हुए भी, "अपने आपको परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया।" (फिलिप्पियों २:६-७)

यूहन्ना के सुसमाचार में, येशू उनके सुननेवालों से कहते है, कि वो केवल वही चीजें करते हैं, जो अपने पिता को करते देखते है और वही कहते है, जो अपने पिता को कहते सुनते है। (यूहन्ना ५:१९, ७:१६)

जब येशू सामरिया में थे तब अपने शिष्यों से बोलते हुए, उन्होंने उनसे कहा कि मेरा भोजन यह हैं, कि मैं अपने स्वर्गीय पिता की इच्छा को पूरा करूँ। (यूहन्ना ४:३४)

येशूने अपने पिता का प्यार, महिमा, अधिकार और सामर्थ्य प्राप्त किया। प्रभू येशूने ये चीजें कभी भी अपने आपको नही दिये। उन्होंने ये सारी चीजें वरदान स्वरुप पायी। असल में, जो उन्हें केवल स्वर्गीय पिता से मिलता है उसे पाने के लिए प्रभू येशू सारे लालसाओं को धूत्कारते है। असल में, वो सारे लालसाओं का प्रतिलोभन करते हैं, ताकि जो वे केवल स्वर्गीय पिता से पानेवाले है, उसे अपने आपके लिए पूर्ण कर सके। राज्य का अर्थ, राजा के सारे आशिर्वादों को पाना है और येशूने अपने पिता के सारे आशिर्वादों को पाया।

हमारी मन की दीनता यह परमेश्वर के मन की दीनता का प्रतिबिंब और सहभागीता है।

आशिर्वादित होना यह खुद के कमी को पहचानने से भी बढ़कर है। वो समृद्धी क्या हैं, जो हम पानेवाले है? नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य के दूसरे भाग में, येशू हमें बताते हैं, कि परमेश्वर का राज्य कैसा है। हम आश्वासीत होंगे, पृथ्वी के अधिकारी होंगे, संतुष्ट होंगे। राज्य का वरदान जो हम पानेवाले है, उनके कुछ खास गुण है, जो पूर्णतः राजा का प्रतिबिंब है। और जो हमारे आशिर्वादित होने के लिए बहुत ही जरुरी है।

तो चलो हम हमेशा आशिर्वादित होने की स्थिति में रहे। मत्ती ५:४-१२

मत्ती ५:४ "धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएँगे।"

मत्ती ५:५ "धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।"

मत्ती ५:६ "धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि पे तृप्त किए जाएँगे।"

मत्ती ५:७ "धन्य हैं वे, जो दयावंत हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।"

मत्ती ५:८ "धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।"

मत्ती ५:९ "धन्य हैं वे, जो मेल करानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे।"

मत्ती ५:१० "धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"

मत्ती ५:११ "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निंदा करें, और सताएँ और झूठ बोले बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।"

मत्ती ५:१२ "तब आनंदित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है। इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था।"

– बहन लिनेट मेरगुल्याओं

यह समय है, हमारे उद्धार का। अगर परमेश्वर की आत्मा हम पर हैं, तो हम हमेशा के लिए खुश रह सकते है। हम अंतिम दिनों में है, मेरे मित्रों; अगर हम अपना जीवन उसी ढ़ग से जीना जारी रखे जैसे हम जीते आये हैं, तो हम अपना लक्ष्य खोएंगे। आज तक, हमें परमेश्वरने थामें रखा है। ज्यादा तर लोग परमेश्वर के व्यक्ति के लिए प्रार्थनासभा में आते है, परमेश्वर के लिए नहीं। जरुरी हैं, कि हम अपना भरोसा परमेश्वर में रखें और ना कि परमेश्वर के व्यक्ति में, क्योंकि परमेश्वर का वचन कहता है, "श्रापित है वह मनुष्य जो मनुष्य पर भरोसा करता है।"

परमेश्वर वो सारी चीजें हमे पुनःप्राप्त करवाना चाहते है, जो हमने खोई है। क्योंकि याद रखो, पिडा में ही उद्धार है। इश्वरी पिडा और इश्वरी दुःख शांति लाता है। लोगों को पसंद नहीं कि वे वचन के खातिर होनेवाले मनस्ताप और अत्याचार जैसे पिडाओं का सामना करें। अगर हम पिडाओं का सामना नहीं करते है, तो अत्याचार में फस जाते है। फिर हम परमेश्वर पर दोष लगाते है और शिकायत करते हैं, कि हमारे जीवन में चीजें नहीं हो रही। क्यों? क्योंकि हमने उद्धार नहीं पाया है।

हम उद्धार नहीं पा सकते, अगर, हम परमेश्वर के आभिषेकित व्यक्ति के खिलाफ सोचते या बोलते है। हमे सकारात्मक बोलने की आदत करनी है। कुछ लोग कहते है, "मै किसी दिन मसीह को अपने मुक्तिदाता के रुप में अपनाऊँगा और बप्तिसमा लेते हुए उनका पालन करुँगा, लेकिन आज नहीं। मै तैयार नही हूँ। पहले मुझे अपने जीवन में कुछ बदलाव करना है।"

मेरे दोसत, तुम एक बहुत बड़ी गलती कर रहे हो। तुम परमेश्वर के लिए वो करने कि कोशिश कर रहे हो जो परमेश्वर तुम्हारे लिए करना चाहते है। आप खुद के बलबूते पर, अपने जीवन को कभी भी उस ढ़ाचे में नहीं डाल सकते जो परमेश्वर को प्रसन्न करेगा। तो स्वयं कोशिश करना बंद करो और परमेश्वर पर निर्भर होना शुरु करो।

अगर हमारे लिए कभी कोई ऐसा समय आये जिसकी शुरुआत "परमेश्वर" का नाम लेते हुए हो, तो वह समय अब है। तो खुद की जितनी भी तारिफें हम इस संसार से सुनते है उसके बीच हम इस बात को याद रखे कि परमेश्वर के बिना, यह संसार बहुत पहले ही मिट जाता। तो हम सबकुछ परमेश्वर के भले हातों में सौंपेंगे, जो हमे इतनी दूर ले आये है। और उनके अनुग्रह द्वारा ही हम यहाँ से आगे बढ़ सकते है। अगर गुजरा साल खास नहीं था और चीजें वैसी नहीं हुई जैसे आपने अपेक्षा की थी, तो चिंता न करो। अपना भरोसा परमेश्वर में रखो। सबकुछ उन्हें दे दो। अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित करो। प्रभू को जानने के लिए अपने जीवन के प्रत्येक भाग को जाँचो। यह समय सर पर हात लगाकर बिते हुए साल के बारे में सोचने का नहीं है। ना हार मान ने का और नाही अपने ही महिमा में रहने का है। परंतु यह समय हैं, कि हम "विश्वास में आगे बढ़े।" यह समय है हमारे उद्धार का।

दोस्तो, अगर तुम्हें पवित्र शास्त्र में कहीं पर भी यह लिखा मिले, जो कहता है "कल पश्चाताच करो" तो शायद मै मान लूँ। लेकिन पवित्र शास्त्र हमेशा कहता है "आज अगर तुम मेरी आवाज सुनते हो, तो अपने ह्रदय को कठोर ना करो" (इब्रानियों ३:७-८)। यह परमेश्वर के कृपादृष्टि का समय है। आज का यह दिन उद्धार का दिन है। पश्चाताप कल करने का अर्थ हैं, कि पश्चाताप करने मे तुम और एक दिन की देरी करते हो।

"आओ, हम आपस में सोच विचार करें : तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम के समान उजले हो जाएँगे; और चाहे अर्गपानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएँगे।" (यशायाह १:१८)

पवित्र कलीसिया की दीवारें और लंबी बैंचे अगर बोल सकते, तो वे अनगिनत लोगों की दूःखद कहानियाँ बताते, जो अब दूर है, जो परमेश्वर के राज्य से दूर है।

परमेश्वरने कहा, "अभी!" उन्होंने जवाब दिया, "बाद में" और यह "बाद में" फिर "कभी नही" बना।

अगर अब नहीं, तो कब? अगर यहाँ नहीं, तो कहाँ? अगर आप नहीं, तो कौन? अगर नहीं, तो क्यों नहीं? "अभी परमेश्वर के कृपादृष्टि का समय है, अभी परमेश्वर के उद्धार का दिन है।" अभी, अभी, अभी, अभी!

– संपादकीय डेस्क

K4C Corner

OUR GOD HAS MADE...

Can you fill in the missing words in the puzzle below using the bible verses listed at the side?

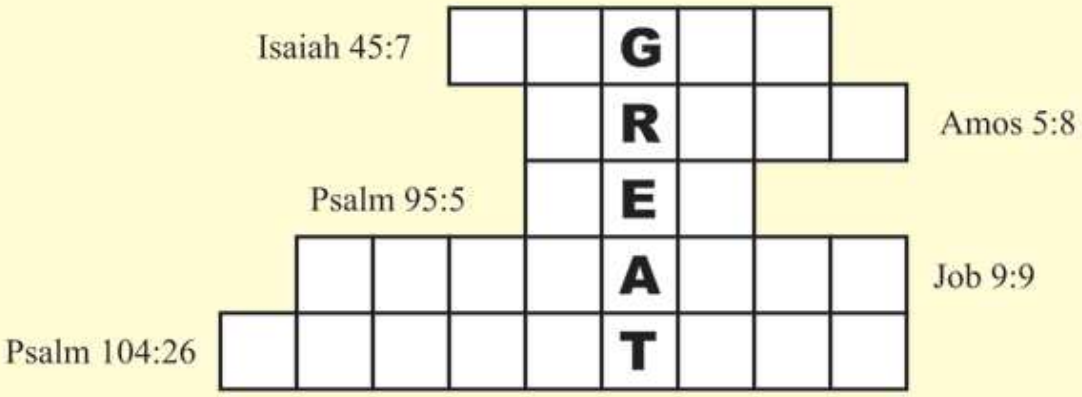

DAILY SCRIPTURE READING - NOVEMBER 2013

Date	Old Testament	Psalms	Proverbs	New Testament
Nov 1, 2013	Jeremiah 49:1 - 50:46	Psalms 119:121-128	Proverbs 28:6	Titus 1:1-16
Nov 2, 2013	Jeremiah 51:1 - 52:34	Psalms 119:129-136	Proverbs 28:7-8	Titus 2:1-15
Nov 3, 2013	Lamentation 1:1 - 2:22	Psalms 119:137-144	Proverbs 28:9-10	Titus 3:1-15
Nov 4, 2013	Lamentation 3:1 - 5:22	Psalms 119:145-152	Proverbs 28:11	Philemon 1:1-25
Nov 5, 2013	Ezekiel 1:1 - 2:10	Psalms 119:153-160	Proverbs 28:12	Hebrew 1:1-14
Nov 6, 2013	Ezekiel 3:1 - 4:17	Psalms 119:161-168	Proverbs 28:13	Hebrew 2:1-18
Nov 7, 2013	Ezekiel 5:1 - 6:14	Psalms 119:169-176	Proverbs 28:14	Hebrew 3:1-19
Nov 8, 2013	Ezekiel 7:1 - 8:18	Psalms 120:1-7	Proverbs 28:15	Hebrew 4:1-16
Nov 9, 2013	Ezekiel 9:1 - 10:22	Psalms 121:1-8	Proverbs 28:16	Hebrew 5:1-14
Nov 10, 2013	Ezekiel 11:1 - 12:28	Psalms 122:1-5	Proverbs 28:17-18	Hebrew 6:1-20
Nov 11, 2013	Ezekiel 13:1 - 14:23	Psalms 122:6-9	Proverbs 28:19	Hebrew 7:1-28
Nov 12, 2013	Ezekiel 15:1 - 16:63	Psalms 123:1-4	Proverbs 28:20	Hebrew 8:1-13
Nov 13, 2013	Ezekiel 17:1 - 18:32	Psalms 124:1-8	Proverbs 28:21	Hebrew 9:1-28
Nov 14, 2013	Ezekiel 19:1 - 20:49	Psalms 125:1-5	Proverbs 28:22	Hebrew 10:1-18
Nov 15, 2013	Ezekiel 21:1 - 22:31	Psalms 126:1-6	Proverbs 28:23	Hebrew 10:19-39
Nov 16, 2013	Ezekiel 23:1 - 24:27	Psalms 127:1-5	Proverbs 28:24	Hebrew 11:1-16
Nov 17, 2013	Ezekiel 25:1 - 26:21	Psalms 128:1-6	Proverbs 28:25	Hebrew 11:17-40
Nov 18, 2013	Ezekiel 27:1 - 28:26	Psalms 129:1-4	Proverbs 28:26	Hebrew 12:1-29
Nov 19, 2013	Ezekiel 29:1 - 30:26	Psalms 129:5-8	Proverbs 28:27	Hebrew 13:1-25
Nov 20, 2013	Ezekiel 31:1 - 32:32	Psalms 130:1-4	Proverbs 28:28	James 1:1-27
Nov 21, 2013	Ezekiel 33:1 - 34:31	Psalms 130:5-8	Proverbs 29:1	James 2:1-26
Nov 22, 2013	Ezekiel 35:1 - 36:38	Psalms 131:1-3	Proverbs 29:2-3	James 3:1-18
Nov 23, 2013	Ezekiel 37:1 - 38:23	Psalms 132:1-9	Proverbs 29:4	James 4:1-17
Nov 24, 2013	Ezekiel 39:1 - 40:49	Psalms 132:10-18	Proverbs 29:5	James 5:1-20
Nov 25, 2013	Ezekiel 41:1 - 42:20	Psalms 133:1-3	Proverbs 29:6	1 Peter 1:1-25
Nov 26, 2013	Ezekiel 43:1 - 44:31	Psalms 134:1-3	Proverbs 29:7	1 Peter 2:1-25
Nov 27, 2013	Ezekiel 45:1 - 46:24	Psalms 135:1-7	Proverbs 29:8	1 Peter 3:1-22
Nov 28, 2013	Ezekiel 47:1 - 48:35	Psalms 135:8-14	Proverbs 29:9	1 Peter 4:1-19
Nov 29, 2013	Daniel 1:1 - 2:49	Psalms 135:15-21	Proverbs 29:10	1 Peter 5:1-14
Nov 30, 2013	Daniel 3:1 - 4:37	Psalms 136:1-9	Proverbs 29:11	2 Peter 1:1-21

गवाहियाँ

ग वा हि याँ

मैं सारे युवाकों को अपना अनुभव बताना चाहता हूँ। जब हम कॉलेज में होते है, तो सबसे पहले हम समझौता करते है। और तब शैतान हम मे प्रवेश करता है। जीवन में तीन चीजें है, जो तुम कभी भी ना करनाः अ) कभी भी परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन ना करना। ब) कभी भी अपने माता पिता की आज्ञा का उल्लंघन ना करना। और क) कभी भी परमेश्वर के मनुष्य का विश्वासघात ना करना। मैं ने इन सारी बातों को नहीं माना और इसी कारण भयानक पिड़ाओ से गुजरा।

मैं एक आशिर्वादित बच्चा था। आठ साल की उम्र से ही मै ड्रमस (वाद्य) बजाने लगा। मैं स्तुति प्रशंसा आगे बढ़ाता था। किसी गुरु की मदत के बिना ही परमेश्वरने मुझे गिटार बजाना सिखाया। आज भी, मैं संगीत पढ़ नहीं सकता लेकिन केवल सुनकर ही मैं संगीत बजा सकता हूँ, क्योंकि मुझे संगीत की विद्या का वरदान परमेश्वरने दिया है। माँ के साथ मैं भी कलीसिया में सेवा करता था। लेकिन मुझ में अहंकार आया। मै परमेश्वर को नजरअंदाज करने लगा। दुनिया के लिए संगीत बजाने लगा। और तब मेरे जीवन ने एक भयानक मोड़ लिया।

मैं एक लड़की से प्यार करने लगा। १४ साल की उम्र में, मैंने उसके लिए अपना घर भी छोड दिया। मुझे लगा कि मेरे माता पिता सहीं नहीं है, लेकिन मै हूँ। मैं पूरी तरह से अपने मित्रों, गर्द, और शराब में फँस गया था। जिसकी आप कलपना करो वो सारे बुरे काम मैंने किये।

मैं एक महीने में ६५००० से ८५००० तक कमाया करता था। लेकिन आज तक मैंने एक रुपया भी जमा नहीं किया। मेरे सारे पैसे शराब, कोकेन जैसे बहुत सी चीजें खरीदने में खर्च हो जाते थे। मै परमेश्वर के पास भी लौटा नहीं क्योंकि मैं शर्मीदा था।

अपने परमेश्वर और परिवार से दूर रहने के दौरान मुझे तीन बार मलेरिया हुआ। और तीन महीनों तक लगातार सर दर्द भी था। कभी कभी दर्द की वजह से मेरी आँखे लाल हुआ करती थी। सचमुच, अपने दर्द से मैं बहुत ही थक चुका था।

तीन बार मैंने आत्महत्या करने की भी कोशिश की। मै चलती रेलगाड़ी (ट्रेन) से खूदा, लेकिन मेरे शरीर पर एक भी खरोंच नहीं आयी। छह बार मैंने अपनी नसे काटी, पर मैं मरा नहीं। क्योंकि मेरे और मेरे परिवार के लिए परमेश्वर की योजना थी। पमेश्वर की योजना थी, कि मै जीयू, घर वापस लौटू और अपने परिवार से फिर से जुड जाऊँ। नौ साल के बाद मैं ने अपनी माँ और पिताजी से बात की। वे मुझे स्ट्रेचर पर गोवा से मुंबई ले आए। जाँच में पता चला, कि मेरे दिमाग के दाहिनी ओर एक पुटी (सिस्ट) थी। डॉक्टरोने कहा कि यह पुटी धीरे धीरे कैंसर की गाँठ बन सकती है। डाक्टरोंने कहा, कि मै केवल चार घंटे ही जिंदा रहूँगा। डॉक्टरोंने मुझे सलाह दी गई थी, कि मैं ऑपरेशन करा लू और साथ ही मुझे यह भी समझाया कि ऑपरेशन के बाद हो सकता है, कि मैं बिस्तर पर ही पड़ा रहूँगा और ३-४ सालों तक चल फिर नहीं सकूँगा।

लेकिन मुझे डॉक्टर द्वारा नहीं बल्कि परमेश्वर द्वारा आत्मिक ऑपरेशन कि जरुरत थी। इसलिए परमेश्वर मुझे ब्रदर मैन्युएल मिनिस्ट्रिज में ले आए। एक प्रार्थना सभा के दौरान, ब्रदर मैन्युएल येशू के लहू में प्रार्थना कर रहे थे और कह रहे थे, आपके शरीर के जिस भाग में आप चंगाई चाहते हो, तो मसीह के शरीर के उस भाग को खाओ। मैं तुरंत ही, पूरे विश्वास से येशू के लहू में प्रार्थना करने लगा। मैं प्रभू की स्तुति और धन्यवाद करता हूँ कि जैसे ही मैंने प्रार्थना में मसीह के शरीर के उस भाग को आत्मिक रुप से खाया जहाँ ३२.६ सेंटिमीटर की पुटी थी, तो वह पुटी गायब हो गयी।

इस पुटी की वजह से पिछले ६ महीनों से मैं अपने सर को हिला नहीं पा रहा था। परंतु अब, बिल्कुल भी दर्द नहीं है। येशू के लहू से ही मुझे इस पुटी से छुटकारा मिल गया। आज, मैं यह गवाही दे सकता हूँ, क्योंकि परमेश्वरने मुझे कभी भी छोड़ा नहीं। मैं प्रभू का धन्यवाद करता हूँ, इस सारी पुनःप्राप्ती और उन सारी चीजें के लिए जो परमेश्वरने मेरे जीवन में कि है।

-सेमूएल करकड़ा

मिशन का हफ्ता और ध्यानसभा (रिट्रिट)
दिसंबर ४-८, २०१३

गोवा शुभसमाचार घोषणा
दिसंबर 14-15, २०१३

रविवार सब्त
श्याम ४ से ८ बजे तक

बुधवार
आर. डी. नेश्नल कॉलेज
लिंकिंग रोड,
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई-४०००५०, भारत
समयः शाम ५ बजे

मुख्यकार्यालय
एस-4, ब्ल्यु नाइल अर्पाटमेन्टस
सी. एच. एस.लिमीटेड
प्लोट नंबर ३९, वरोडा रोड
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई-४०००५०,
भारत

भारत
पी.ओ. बोक्स १६६५५
मुबई - ४०००५०, भारत
दुबई
पी.ओ. बोक्स १७८८०
फोन नं: +९७१५०६५०७५१७

Live in the Spirit
BRO. MANUEL MINISTRIES

Printed at Jyoti Printers